मृणालिनी देसाई

राजा महाशीलव

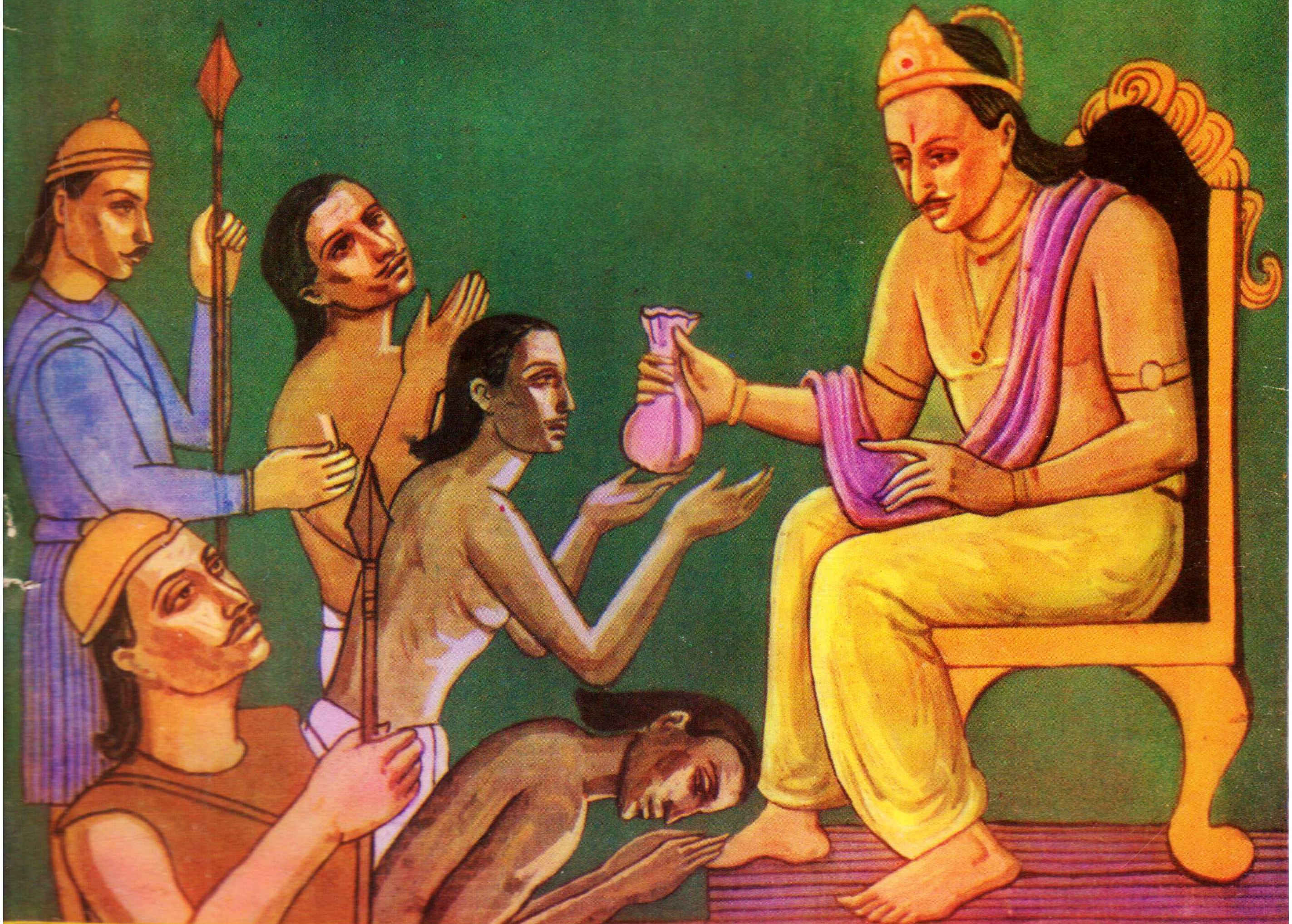

बच्चों की कहानियां   हिन्दुस्तानी प्रचार सभा   बम्बई

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमजोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये जमाने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमजोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हकीकत है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुकाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर जोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैगम्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्जत की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफसोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और जिन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत-पैगम्बरों की जिन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

राजा महाशीलव

मृणालिनी देसाई

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

© हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, १९८२

संपादक :

मूलशंकर भट्ट

चित्रकार :

किशोर रणदिवे

प्रकाशक :

वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
७, नेताजी सुभाष रोड
बम्बई–४०० ००२

मुद्रक :

के. श्रीनिवासन
ऑनलुकर प्रेस
१६, सासुन डॉक
कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

मूल्य :

दो रुपये

राजा महाशीलव

बहुत पुराने समय की बात है ।

वाराणसी नगरी में ब्रह्मदत्त नाम का राजा राज करता था। बोधिसत्व ने उसी राजा के यहां पुत्र बनकर जन्म लिया था ।

राजकुमार का नाम रखा गया शीलव !

शीलव कुमार बुद्धिमान था। सोलह साल पूरे होने से पहले ही हथियार और राजनीति की सभी विद्याओं में वह माहिर हो चुका था। उसका स्वभाव कोमल और सबके लिए प्यार भरा था ।

राजा ब्रह्मदत्त के स्वर्गवास के बाद राजकुमार शीलव वाराणसी नगरी की राजगद्दी पर आये । उनका राज्य काफी बड़ा और खुशहाल था ।

राजा महाशीलव शांतिप्रिय थे । प्रजा के लिए दया और क्षमा की भावना रखते थे । प्रजा को अपनी औलाद की तरह समझते थे । प्यार और न्याय के साथ सबसे बराबरी का बर्ताव करते थे ।

प्रजा भी अपने राजा से प्रेम करती, भरोसा रखती और उसके हुक्म का पालन करना अपना फर्ज समझती थी ।

राजा महाशीलव स्वभाव के कोमल जरूर थे, लेकिन अपराधों के बारे में सावधान भी थे। कानून तोड़ना, झूठ बोलना और प्रजा को हानि पहुंचाना वे कभी सहन नहीं करते थे ।

उनका एक मंत्री था । उसने एक बार अंतःपुर में बुरा बर्ताव किया। गुनाह गंभीर था। राजा ने मंत्री को

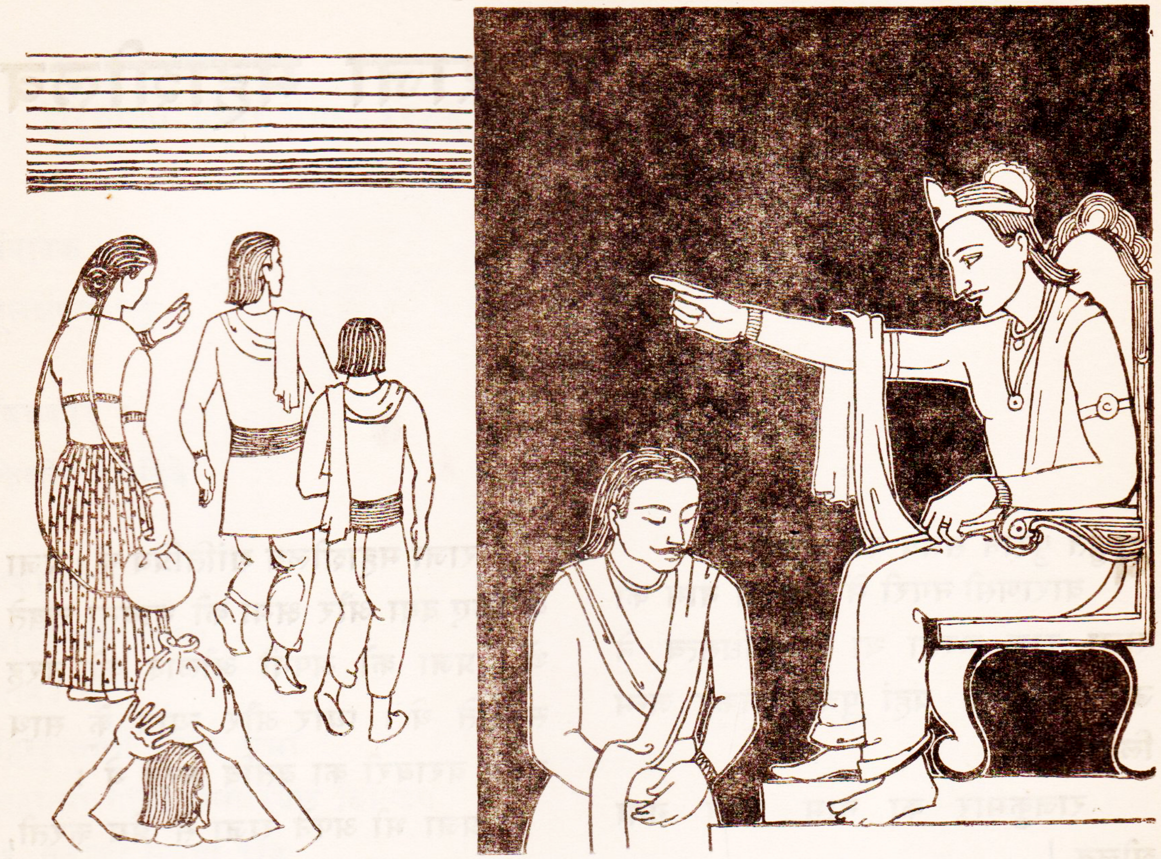

उसके पद से हटा दिया और हुक्म दिया कि वह अपनी धन-दौलत और परिवार को साथ लेकर राज्य की हद से दूर निकल जाये।

वह अपराधी मंत्री अपने परिवार के साथ कोशल-राज चला गया। रहने के लिए घर-बार का इंतजाम किया, राज्य के अफसरों से दोस्ती गांठी और जोड़-तोड़ करके कोशलनरेश के दरबार तक पहुंचा।

कुछ ही दिनों में राजसभा में भी वह एक अच्छा पद पाने में सफल हो गया। राज के कामकाज का अनुभव तो उसे था ही।

कोशलनरेश उसके काम करने के ढंग, नम्रता और मधुर बातचीत से खुश हो गया। थोड़े ही दिनों में वह राजा

का प्यारा साथी और मंत्री बन चुका था। उसकी सलाह से राजा को यश और लाभ मिलता रहा। राजा उस पर पूरा विश्वास करने लगा।

राजा के करीबी दोस्त और प्रधान मंत्री बनने के बाद एक दिन उसने कोशल-नरेश को अपने मन की बात बता दी, "महाराज!", उसने कोशलनरेश से कहा, "वाराणसी पुण्य-नगरी है। वाराणसी का राज विशाल और शक्तिशाली है, धन-धान्य से भरा है। लेकिन वह एक ऐसा मधुकोश है कि जिसमें मधु है लेकिन डंक मारनेवाली मक्खी नहीं है!"

"मतलब?"

"सरकार, आप जानते हैं, वाराणसी में शीलव राजा राज करता है। वह अत्यंत कोमल स्वभाव का, शांतिप्रिय राजा है। उसको लड़ाई-झगड़े से नफरत है। चोरों को भी कुछ-न-कुछ देकर विदा करता है। हम थोड़ी-सी सेना लेकर काशी पर चढ़ाई कर दें तो उस राज्य को आसानी से जीत लेंगे। वहां हमारे जानमाल को कोई खतरा नहीं है।"

"बात बिलकुल सीधी-सादी है, इसलिए असंभव लगती है। काशीराज कितना बड़ा है, पुराना है। इतना लम्बा-चौड़ा प्रदेश, जो धन-धान्य से भरा है, पवित्र गंगा के जल से सिंचित है, जहां का राजा अपनी प्रजा से प्रेम करता है, प्रजा में असंतोष नहीं है, वहां राज की रक्षा करनेवाला कोई नहीं, भला यह कैसे माना जा सकता है? जरूर तुम काशी-राज के जासूस हो। क्या मेरी बरबादी का ढोंग रचाया है? बता, सच क्या है?" राजा नाराज हुआ।

मंत्री ने बार-बार यकीन दिलाया कि वह कोई जासूस नहीं है लेकिन कोशल नरेश जैसे सच्चे राजा की शंका दूर नहीं हुई।

मंत्री ने बात आगे बढ़ायी "अगर मेरी परीक्षा करनी हो तो मेरे साथ कुछ सैनिक भेजिए। मैं उनको लेकर काशी-राज की सरहद पर जाऊंगा और सीमा-प्रदेश के नगरों को आपके लिए जीतूंगा।"

कोशलनरेश को मंत्री की बातों से बड़ा अचरज हुआ। अगर इसकी बातों में जरा भी सच्चाई है तो यह बड़े लाभ की बात है, यह सोचकर कोशलनरेश ने छोटी-सी सेना मंत्री के साथ कर दी।

कोशलसेना काशीराज की सरहद पर पहुंची। छोटे-छोटे गांव लूटे। गांव के

लोग बहुत बहादुर थे। लूटनेवालों को पकड़कर अपने राजा के पास ले गए।

काशीनरेश ने परदेशी सैनिकों से पूछा, "गांव को क्यों लूटते हो? बेकसूर प्रजा को क्यों तंग करते हो? इन बेचारों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

"महाराज!", कोशल सेनापति ने अपनी चालाकी छुपाते हुए कहा, "हम भी गरीब प्रजा हैं। पेट पालने के लिए सब कुछ करना पड़ता है। हमें भी ऐसे काम खराब लगते हैं, लेकिन हम पेट से लाचार हैं।"

"अच्छा, यह बात है तो सीधे मेरे पास क्यों न आये तुम लोग? गरीबों के मामूली झोंपड़े लूटकर तुम्हें क्या मिलेगा? मेरे भंडार से जो भी चाहिए, जितना भी चाहिए ले जाओ, और देखो, ऐसा बुरा काम कभी मत करना।"

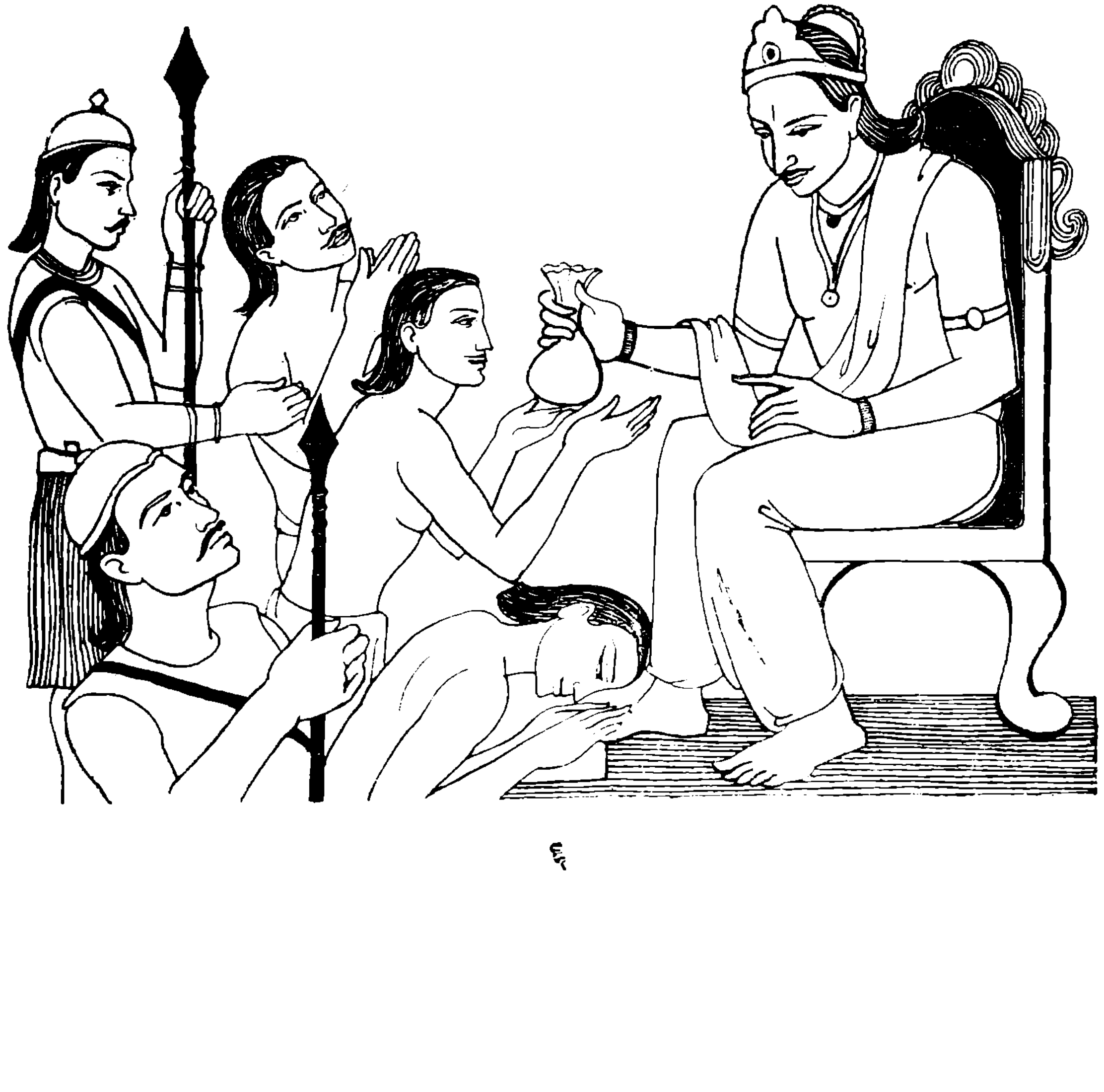

सब कैदियों को बहुत-सा धन देकर महाशीलव राजा ने विदा कर दिया।

वे सब कोशलनरेश के पास लौटे।

काशीराज महाशीलव की इस माफी और नम्रता की बातें उन्होंने अपने राजा को सुनाई। महाशीलव लड़ाई को पसंद नहीं करता है, मंत्री की यह बात बिलकुल सच्ची निकली। काशी का राज जीत लेना आसान था। फिर भी कोशल नरेश, एक बड़ी सेना लेकर महाशीलव से मुकाबला करने की हिम्मत न कर सका।

महाशीलव जैसे नम्र और सच्चे राजा के साथ लड़ाई करके विजयी होना और संपत्ति लूटना कोई गौरव की बात तो नहीं थी। कोशलनरेश की अंतरात्मा मना कर रही थी, लेकिन उसे धन-दौलत, राज-पाट और सत्ता का मोह खींचता भी था। छोटी-मोटी सेना को बार-बार भेजकर छोटे-मोटे गांव पर चढ़ाई करके वह काशी का धन-धान्य लूटता रहा।

राजा सैनिकों को हर समय धन-धान्य देता रहा और कहता रहा कि गरीब प्रजा को दुखी मत करो। उसने कोशल के सैनिकों को न कभी कोई सजा दी और न कभी उनका मुकाबला किया। कोशल-नरेश की हिम्मत बढ़ती गयी। आखिर उसने एक दिन काशी नगरी पर चढ़ाई का फैसला किया।

एक बड़ी सेना के साथ वह काशी की ओर बढ़ा।

हमले की खबर महाशीलव तक पहुंची।

"कोशलराज तो किस खेत की मूली है! हमें हुक्म दीजिए, उसका सर कुचलकर आपके चरणों में रख दें। हमारे होते हुए महाराज को कैसी चिंता?," महाशीलव के अजेय सेनानायकों ने गर्जना की।

महाशीलव को कोई चिंता न थी। अपने बहादुर नायकों के बारे में उन्हें कोई शंका न थी। अपनी प्रजा पर भी उन्हें पूरा भरोसा था। और सबसे अधिक भरोसा था खुद अपने आप पर।

अगर वे चाहते तो जंबुद्वीप का साम्राज्य जीतना उनके लिए एक आसान बात थी। लेकिन राज को बढ़ाने की उनके मन में इच्छा ही न थी। दस-बीस सेनाओं से भी वे मुकाबला कर सकते थे। कोशल-सेना को हराना उनके लिए मामूली बात थी।

"भाईयो!", उन्होंने अपने सेना-नायकों से कहा, "अपने लिए किसी को

भी दुख पहुंचाना मुझे ठीक नहीं लगता। उनको कोशल के साथ काशी का राज भी करना है तो करने दो। विरोध करने की कोई जरूरत नहीं।"

कोशलनरेश बड़ी धूमधाम के साथ काशी नगरी में प्रवेश कर रहा है, ऐसी खबर लेकर राजदूत महाशीलव की राजसभा में आया। बहादुरों ने फिर महाराज महाशीलव से आज्ञा मांगी, लेकिन काशीनरेश का एक ही आदेश था, "जो हो रहा है, शांति से देखते रहो!"

कोशलनरेश ने संदेशा भेजा, "हमें राज दे दो, नहीं तो युद्ध करो!"

काशीनरेश ने दूत से कहा, "कोशलनरेश से कहो, मेरे साथ युद्ध करने की कोई जरूरत नहीं। उनको अगर हमारा राज ही चाहिए तो खुशी से ले लें।"

"महाराज!," राजसभा के वीर मंत्रियों ने फिर विनती की, "हमें हुक्म दीजिए। पल-भर में उस लुटेरे को पकड़कर छिन्न-भिन्न कर देंगे!"

लेकिन राजा ने दुश्मनों का मुकाबला करने से इन्कार कर दिया और सेवकों को हुक्म दिया कि राजमहल के बड़े दरवाजे खोल दिए जायें। दरवाजे खोल दिए गये और काशीनरेश राजसभा में जाकर अपनी जगह पर बैठ गये। प्रधानमंत्री भी साथ था। दूसरे मंत्री और अफसर भी मौजूद थे।

कोशलनरेश की सेना राजमहल तक पहुंची। किसी भी जगह प्रजा या सैनिकों की ओर से जरा भी विरोध नहीं किया गया। काशीनरेश की प्रजा और सेना संयम और शांति से राजा के हुक्म का पालन कर रही थी। आनेवालों को जो भी चाहिए, दे दो, यही स्वागत का तरीका सब जगह था। राजमहल के तमाम दरवाजे खुले थे।

कोशलराज अपने सेनानायकों के साथ अन्दर गये और राजसभा में प्रवेश किया।

प्रधान मंडल के साथ बैठे हुए काशीनरेश को देखकर, विजय के जोश में उसने अपने सेनानायकों को हुक्म दिया, "राजासमेत सभी के हाथ पीछे बांध दो।"

महाराजा शीलवराज टस-से-मस भी न हुए। उनके मंत्रियों और अफसरों के मन में लावा उमड़ रहा था, हाथों में बल था, दिल में जोश था, लेकिन राजा के हुक्म ने उन्हें विवश बना दिया था। किसी ने भी लोहा न लिया।

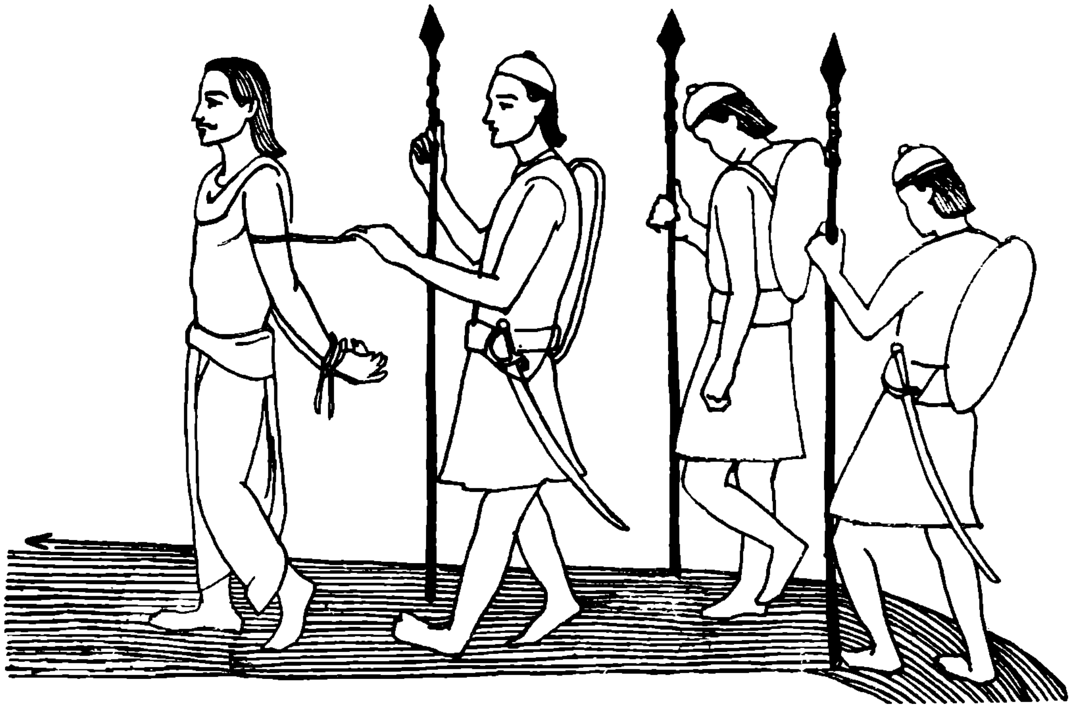

राजा, प्रधान मंत्री और दरबारियों के हाथ बांध दिए गए थे। उन सबकी अजीब-सी हालत देखकर कोशलनरेश आग-बबूला होकर गरज उठा, "ये आदमी नहीं, मुरदे हैं। ले जाओ इन मुरदों को और श्मशान की रेत में गाड़ दो! सिर बाहर रखना ताकि सियार, कुत्ते सबको फाड़-फाड़कर खायें और काम तमाम होने तक ये कुछ भी न कर पायें।"

अपने राजा की कड़ी आज्ञा के मुताबिक कोशल-सैनिकों ने प्रधान मंडल और सेनानियों समेत राजा महाशीलव के हाथ पीछे बांध दिए और सबको खींचकर श्मशान की ओर ले गये। वहां की रेतीली जमीन में सबको दफना दिया।

उस तकलीफ की हालत में भी काशीराज महाशीलव बिलकुल शांत थे। मुख पर वही नम्रता, प्रसन्नता थी जो राजगद्दी पर होती थी। उनका साफ मन केवल दोस्ती के भाव से भरा था।

मंत्री और सभी अधिकारी अपने राजा के साथ थे। किसी एक ने भी राजा का

विरोध न किया, दुश्मन से जरा भी बदला न लिया। राजा महाशीलव की प्रजा राजनिष्ठ थी। राजा और प्रजा के बीच प्रेम का नाता था, और प्रेम का शासन बड़ा ताकतवर होता है।

काशीराज के लोग अपनी बुरी हालत से नहीं, बल्कि राजा महाशीलव जैसे साधुचरित राजा की बुरी हालत देखकर दुखी हो गए। उनकी आंखों में क्रोध की ज्वाला दहकने लगी।

राजा सब कुछ देख रहे थे। उन्होंने अपने लोगों को समझाया, "मेरे बहादुरो, मेरे चतुरमंत्री! कोशलनरेश से क्रोध न करना। अपनी कमजोरी छुपाने के लिए बेचारा हमें तंग कर रहा है। लेकिन हमारे पास छुपाने जैसा कुछ है नहीं। हमारे मन में उनके लिए भी सद्भावना होनी चाहिए। वही हमारा धर्म है। अपनी दोस्ती से अगर हम उनको जीत लेंगे तो वही हमारी सच्ची जीत होगी।"

श्मशान भूमि उजाड़, सुनसान, वीरान थी। शरीर रेत में टूट रहा था। अपमान से दिल जल रहा था। फिर भी राजा महाशीलव के मन में मैल न था। उनके मन में केवल दोस्ती की उमंग थी शब्दों में शीतल अमृत घुला हुआ था। दूसरे बहादुर सिपाही भी राजा को देखकर अपना गुस्सा ठंडा करने की कोशिश कर रहे थे।

दिन पूरा हुआ। रात ढलने लगी। सियारों की टोलियां जाग उठीं। नरमांस की गंध पाकर जानवर इन लोगों की तरफ बढ़ने लगे। हाथ-पांव रेत में घुसे हुए थे, सर सबके बाहर थे।

जानवरों को आता देखकर राजा के साथ सबने खूब शोर मचाया। डर के मारे सियार भागे। श्मशान में मुरदों के बजाय इतने सारे जिन्दा आदमी हो सकते हैं, यह जानवरों के लिए नई बात थी।

मांस की गंध और भूख से बेचैन होकर सियार एक बार फिर वहां आये। सबने फिर शोर मचाया। दो-चार बार ऐसा ही हुआ।

सियार बहुत चालाक होता है। सियारों ने सोचा – आदमी जिंदा जरूर हैं। शोर भी मचाते हैं, लेकिन पीछा नहीं करते, न मारते हैं। सब-के-सब बेबस हैं। उनसे हमें कोई खतरा नहीं है।

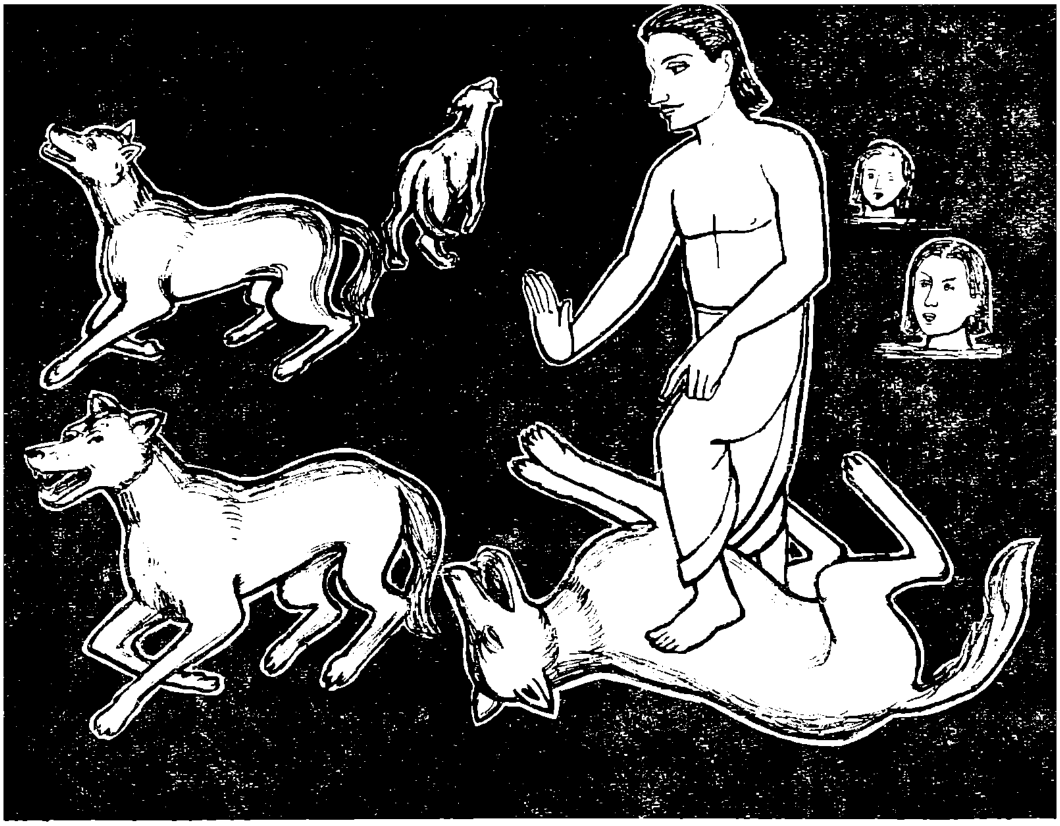

इस बार सियार बड़ी हिम्मत से,
ो बनाकर आगे बढ़े। हाथ से कुछ न
सकनेवालों के शोर-गुल की कोई
ात नहीं होती, जानवर यह बात अच्छी
ः जान गये थे।

एक मोटा सियार बड़ी हिम्मत करके
ा की तरफ बढ़ा।

गड़े लोगों ने फिर शोर मचाया।
ान सियार भला क्यों डरते! वे
निर्भयता से अपने पांव आगे बढ़ा रहे थे
अंधेरे में उनकी आंखें चमक रही थीं

सबकी मौत की घड़ी पास अ
रही थी।

दूसरे वीरों की ताकत और मंत्रिय
की अक्ल क्रोध और शंका से कमजो
पड़ गयी थी जबकि राजा का दिमा
तेजी से काम कर रहा था। पास आने
वाले सियार की तरफ वे होशियारी
नजरें जमाये थे।

सियार करीब आया। राजा ने उसके सामने अपना सिर झुका दिया। भोजन जैसे अपने-आप ही मुंह में आ गया। वह पूरा जोर लगाकर राजा का गला घोंटने लगा। राजा ने पूरी ताकत से अपनी ठोड़ी से उसको दबाया। सियार के लिए यह मुसीबत नयी थी। उसने अपना जबड़ा निकालने की भरपूर कोशिश की। लेकिन राजा के शरीर में हाथी का बल था।

सियार का दम घुटने लगा। वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा। उसकी चीख पुकार सुनकर टोली के सारे सियार दुम दबाकर भाग खड़े हुए। बड़ा सियार बेदम होकर नीचे गिर पड़ा।

सियार के साथ राजा सिर्फ अपने सर से मुकाबला कर रहे थे लेकिन रेत में दबा उनका शरीर भी बलपूर्वक हरकत कर रहा था। रेत की पकड़ ढीली पड़ गयी।

राजा ने मुरदा सियार को छोड़ दिया, और रेत से अपना हाथ निकालने की कोशिश की। कुछ ही देर में राजा रेत की कब्र से बाहर निकल आये। फिर फौरन उन्होंने अपने साथियों की मदद की।

एक-दूसरे की मदद से सभी बाहर निकले और राजा के पास इकठ्ठा हुए। सबके सामने सवाल था – अब आगे क्या करना है?

उसी समय श्मशान की दूसरी ओर कुछ लोग एक मुरदा लेकर आये।

अंधेरा, श्मशान का भयानक वातावरण, सन्नाटा, सियारों का रोना, उल्लू की आवाज–मुरदे के साथ आनेवालों के छक्के छूट गये! मुरदा छोड़कर सब भागे। आग जलाने के लिए भी कोई न रहा। मृतदेह वैसी ही पड़ी रही।

मसान के उस कोने में मुरदे का मांस खानेवाले यक्षों का डेरा था। बेसहारा मुरदे को पड़ा देखकर दो यक्ष उस पर टूट पड़े। दोनों आपस में झगड़ने लगे। झगड़ा बढ़ता जा रहा था।

यक्षों ने सोचा, रात यों ही पूरी हो जायेगी। झगड़ा चलता रहेगा, और मुरदा भी हाथ से चला जाएगा। क्यों नहीं, यहां मौजूद शीलवराजा के पास पहुंचकर आखिरी फैसला कर लें हम।

मुरदा लेकर दोनों यक्ष राजा महाशीलव के पास आये और कहने लगे, "राजन, आप धर्मात्मा और इन्साफ करनेवाले हैं। हमने ऐसी बात आपके

बारे में इस श्मशान में भी सुनी है। हम दो प्रेतमांस पर गुजर करनेवाले यक्ष हैं। आज हमें एक मुरदा मिला है। उसे दो बराबर भागों में बांटना है। बंटवारे को लेकर हम दोनों की राय एक-दूसरे से अलग है। आप बंटवारा कर दें। आपका फैसला हमें मंजूर होगा।"

बड़ा अजीब-सा काम था।

राजा ने कहा, "मैं इन्साफ जरूर करूंगा। लेकिन आप यक्ष जानते होंगे कि इन्साफ करनेवाले का शरीर पवित्र होना चाहिए और इस समय मेरा शरीर श्मशान की धूल से मैला है। सफाई के बाद ही मैं इन्साफ के आसन पर बैठ सकूंगा।"

यक्षों की हालत बड़ी अजब होती है। अपना रूप बदलकर वे हर जगह जा सकते हैं।

दोनों हवा की तेजी से काशीनरेश के राजमहल के स्नानगृह तक पहुंचे। वहां विजयी कोशलनरेश के स्नान के लिए सुगंधित, गर्म पानी रखा था। वह पूरा बरतन उठाकर यक्षों ने राजा महाशीलव के सामने जा रखा।

राजा ने स्नान किया। यक्ष साफ–सुथरे, शाही कपड़े भी महल से उठाकर लाये थे। स्नान के बाद पूजा का सामान वगैरह भी सामने रखा गया। हीरे जड़ी थाली में फूल भी थे।

"और कोई हुक्म?" यक्षों ने नर्मी से पूछा।

"खाने का इंतजाम हो जाये, राजा ने कहा, "हममें से किसी ने भी दिन भर से कुछ खाया नहीं। भूख और प्यास के मारे बुरा हाल है।"

राजमहल से राजा के लिए बनाया गया अच्छा खाना लाकर यक्षों ने सब लोगों को दिया। साफ और ठंडे पानी से बरतन भर दिए। भोजन के बाद पान-इलायची वगैरह का भी इंतजाम किया। श्मशान की उजाड़ जमीन, राजा के कदमों से पवित्र हो गयी।

इन सबसे फुरसत पाकर राजा ने कहा, "यक्ष दोस्तो! अब तुम्हारा काम। कहां है वह प्रेत?"

यक्षों ने प्रेत लाकर सामने रख दिया। प्रेत को दो बराबर भागों में बांटने के लिए राजा की जड़ाऊ तलवार भी ला हाजिर की।

राजा ने मुरदे को सिर से छेदकर दो बराबर भाग किए और दोनों यक्षों को दे दिए।

"यक्ष दोस्तो, अब तुम्हारा काम!"

राजा के फैसले से खुश होकर यक्ष बार-बार राजा को प्रणाम करके कहने लगे, "राजन, हमसे कुछ तो सेवा लीजिए !"

राजा महाशीलवराज ने मन में कुछ सोचा और कहा, "ठीक है, मेरे वीर पुरुषों और प्रधानों को उनके घर पहुंचा दो और मुझे मेरे सोनें के कमरे में पहुंचा दो।"

थोड़ी ही देर में सब लोग अपने-अपने घरों में, अपने परिवारों के बीच पहुंच गये।

राजा महाशीलव अपने सोने के कमरे में आये। उनके पलंग पर कोशल-नरेश सो रहे थे।

शीलवराज ने अपनी तलवार निकाली और कोशलनरेश के कंधे पर तलवार की नोक रखकर, उसे जगाया।

कोशलनरेश जाग उठा।

शीलवराज को सामने देखकर हैरत सें कहने लगा, "आप ? ... आप काशी-नरेश शीलव?"

"हां, मैं ही हूं !"

"आप अबतक जिंदा हैं ? अगर जिंदा है भी तो श्मशान से यहां तक कैसे आये ? और आपको यह तलवार भी कैसी मिली ? यह सच है, या मायाजाल ?"

शीलवराज ने हंसकर कहा, "कोशल-नरेश, आप जो भी देख रहे हैं, उसमें न कोई माया है, न जाल।"

"लेकिन आप कैसे आ गये ?" कोशलनरेश ने डरकर पूछा।

काशीनरेश अपनी गद्दी पर बैठे। कोशलनरेश को दूसरी गद्दी पर बैठाया, और उनको सारी हकीकत बता दी।

महाशीलव राज की बात सुनकर कोशलनरेश बड़े लज्जित हुए। कहने लगे "महाराज! भला आदमी होकर भी मैंने आप जैसें साधुचरित राजा को दुख पहुंचाया। मैं आपके गुणों को देख न सका। झूठे घमंड से मैं अन्धा हो गया था। आपकी नम्रता और क्षमा-शीलता को गलत समझ बैठा। धन और राज्य के लोभ में फंसकर यहां तक आया। विजय से फूला न समाया। शैतान बन गया।

"मुझसे तो प्रेतमांस पर गुजर करने-वाले यक्ष अच्छे हैं। वे आपको पहचान गये। दुनिया में वे बुरे और कठोर

कहलाते हैं। लेकिन मैं उनसे नीच हूं, और मूर्ख भी।

"मेरे दोस्त, आप सबसे अच्छे हैं। ताकतवर हैं। अपनी कमजोरी छुपाने के लिए हम हथियारों से लड़ते हैं। हजारों लोगों के जान-माल को नुकसान पहुंचाते हैं। आपको लड़ाई लड़ने की जरूरत ही नहीं। आप निडर हैं। माफ कर देनेवाले हैं। आप जैसे अच्छे और सच्चे महान राजा को जीतने की मूर्खता मैंने की। मुझे क्षमा कीजिए। घमंड, जलन और लालच को छोड़कर मैं आपको प्रणाम करता हूं। श्रद्धा से दोस्ती का हाथ बढ़ाता हूं।"

कोशलनरेश ने महाशीलव को इज्जत के साथ पलंग पर सुलाया और खुद एक मामूली पलंग पर सोये।

अजीबोगरीब घटनाओं से भरपूर वह रात पूरी हो गयी।

दूसरे दिन कोशलनरेश ने काशीराज्य में ढिंढोरा पिटवाया। काशी और कोशल की सेना, दोनों राजाओं के तमाम मंत्री और काशी की प्रजा को बुलावा दिया।

एक बड़े समारोह में हजारों लोगों के सामने कोशलनरेश ने महाशीलव की तारीफ की। पूरे चांद की तरह चमकीले और बला के बहादुर राजा से माफी मांगी और काशी का राज्य आदर के साथ उन्हें सौंपकर कहा, "मैं आपको वचन देता हूं कि मैं आपका और आपके राज्य का पहरेदार बनकर रहूंगा। आपको या आपकी प्रजा को दुश्मनों, चोरों से सुरक्षित रखूंगा। आप बेफिक्र होकर प्रजा का पालन कीजिए। आपकी कृपा और आशीर्वाद हमें हमेशा मिलता रहे।"

काशी से विदा होने से पहले कोशलनरेश ने धोखा देनेवाले मंत्री को बड़ी कड़ी सजा दी।

साधुचरित शीलवराज से दोस्ती का बंधन बांधकर, कोशलनरेश अपनी सेना के साथ कोशल वापस चला गया। ●

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी !

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी पांचवीं किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।

हमारे आगामी प्रकाशन

- राजा महाजनक
- संत जलाराम
- कंजूस इल्लीस
- कूरगडु मुनि
- कण देवता
- बक राक्षस का वध
- हनुमान
- स्वामी विवेकानंद
- सुनहरा नेवला
- भाई हो तो भरत जैसा

बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०००२